कॉफी के उद्गम की कहानी

जबकि कॉफी का उद्गम व्यापकत: अनजाना है पौराणिक कथा कहते हैं कि इसकी उत्पति इथियोपिया के पूर्वी अफ्रीका की भूमि से हुई है। कॉफी को सन्दर्भित करने वाले कुछ बहुत पुराने रिकार्डों में से सबसे लोकप्रिय XV शताब्दी के आरम्भ में मेक्का से अबू-बेक नामक एक ज्ञानी द्वारा लिखा गया 'द सक्सेज़ ऑफ कॉफी है और 1699 में एन्टोयने डी गैलेण्ड ने इसका फ्रेंच में अनुवाद किया इस अनुवादक ने अरेबियन लोक कथा 'ए थौसंड एण्ड वन नाइट' का अनुवाद किया था ।

कॉफी का आविष्कार और उसके सेवन के बारे में सबसे क्षम और सबसे अधिक स्वीकृत पौराणिक कथा वर्ष 850 ए डी के लगभग इथियोपिया में कल्दी नामक बकरी के झुण्ड को सन्दर्भित करता है । कॉफी का उद्गम इस बात पर निर्भर करता है कि आप किससे बात कर रहे हैं और वह कहाँ से आता है पर उसके आविष्कार की एक पौराणिक कथा जो अब भी स्थिर है, वह है कल्दी । एक दिन कल्दी या खालिद जैसा कि वह स्थानीय रूप से जाना जाता था, नामक एक युवा बकरी-चरवाहे ने आश्चर्य से देखा कि उसकी बकरियाँ लाल फलियों वाले चमकदार, गहरे रंग के पत्तियों की झाड़ियों में से खाने बाद नाच रही थी। बे इतने उल्लसित और ऊर्जा से भरे थे कि कल्दी खुद उन फलों को खाने के लिए उत्तेजित हुआ।

जल्द ही, अन्यथा शान्त बकरी का चरवाहा कल्दी को उसके अन्यथा शान्त बकरियों के साथ पूर्ण स्वच्छन्दता से नाचते देखा गया। उसके तुरन्त बाद वहाँ के स्थानीय आश्रम से एक इमाम उस ओर से गुजरे और कल्दी और बकरियों को लाल फलियों वाले चमकदार गहरी पत्तियों की झाड़ी के चारों तरफ नाचने की मनोरम दृश्य को देखकर आश्चर्यचकित रह गए ।

बकरियों या कल्दी से अधिक विश्लेषणात्मक होते हुए, इमाम जिन्हें इन रहस्यात्मक फलियों द्वारा प्रकाशित अनूठे उल्लास के बारे में बताया गया तो उन्होंने उन्हें भिन्न प्रयोगात्मक परीक्षणों के लिए प्रयोग किया । दूसरी ओर उन्होंने टहनियों और फलियों को भुनकर उबालने का निर्णय लिया। जब उन्होंने इन्हें इस तरह पकाया, उसका तुरन्त परिणाम इतना कड़वा था कि उन्होंने पूरे बर्तन और उसमें से पदार्थ को चूल्हे में डालते हुए कल्दी को डॉटा कि उसने उन्हें 'दुष्टों के फल' को चखने पर मजबूर किया। तथापि जब फली जलने लगे, उसके अन्दर की फली ने इतना सुखद और सारवान महक दिया कि उसने इमाम को भुनी फलियों पर आधारित पेय बनाने हेतु सोचने पर मजबूर किया। आश्रम में इस नए पेय को देने पर इमाम ने देखा कि अब वे प्रार्थना के दौरान नहीं सो रहे हैं।

फलियों की जादुई गुणों के बारे में बातें विश्व भर में एक आश्रम से दूसरे आश्रम तक फैल गाए । शीघ्र ही सम्पूर्ण राष्ट्र के आश्रम वासी अपनी रात्रि पूजन के लिए एक संगत के रूप में इस उत्तेजक पेय को पीने के आदी हो गए। कु छ ही समय में इस जादुई पेय का समाचार राज्य के सभी आश्रमों में पहुँच गया। इस पेय को कहवा के रूप में जाना जाने लगा जिसका मतलब 'उत्तेजक और उद्दीपक है। और इस तरह कॉफी की शुरूआत हुई ।

प्रदन - क्विज मास्टर स्टेनली डेविडं
अनुवाद त्रीमती रंजनी गजेन्द्र